शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

लौह अयस्क खदानों में कार्यरत ठेका श्रमिकों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 16.06.2021

देवेश कुमार मेश्राम
रिसर्च स्कॉलर, समाजशास्त्र विभाग,
हेमचन्द यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
ईमेलः deveshmeshram1010@gmail.com

डा0 सपना शर्मा सारस्वत
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग(छ.ग.)

सारांश

किसी भी राष्ट्र के विकास में श्रमिकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।यदि श्रम कल्याण एवं समाजिक सुरक्षा योजनाओं को कंपनी को सही ढंग से लागू किया जाये तो श्रमिकों का कार्य में मन लगा रहता है और यदि सही ढंग से लागू न हो तो कार्य ऊबाव लगने लगता है। श्रमिक राष्ट्र के विकास एवं प्रगति का प्रतीक है। परन्तु मजदूरों की जिन्दगी पहले कि तरह आज भी अभावग्रस्त है। श्रमिक जीवनबद्ध श्रम शक्ति की इकाई है। श्रमिक मेहनतकश होता है। आज जब श्रमिक केवल मजदूरी कमाने के रूप में रह गया है और जब यहां के श्रमिक औद्योगिक आजीविका को एक आवश्यक बुराई मानकर सदैव इससे छुटकारा पाने के लिए प्रयास कर रहा है श्रम कल्याण कार्य एवं सामाजिक सुरक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण हो गये हैं। श्रम कल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा के माध्यम से हम न केवल श्रमिकों के मानवीय जीवन के लिए उचित एवं आवश्यक सुख सुविधाएं जुटा सकते हैं बल्कि उनमें नागरिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित कर सकते हैं। ऐसे में समाजशास्त्रियों का यह कर्तव्य बन जाता है की वह समाज के इन महतवपूर्ण इकाईयों की परेशानीयों एवं अपेक्षाओं को प्रस्तुत कर उन्हें उनका उचित स्थान दिला सकें।

मुख्य शब्दः *समाजशास्त्रीय, असंगठित , ठेका , मजदूर, माइंस।*

प्रस्तावना

विश्व के प्रत्येक भूखण्ड में जीवों का निवास रहा है। हर जीव अपने जीवन के लिए सदैव संघर्ष करता रहता है। यह संघर्ष उसे खुद को प्रकृति के अनुकूल रहने की प्रेरणा देता है। इन जीवों में चाहे वह पशु–पक्षी हो या फिर मानव ये सभी जीव अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए संघर्ष करते हैं और मानव ही ऐसा प्राणी है, जो संघर्ष की इस गतिशीलता में अपने–आप को सुदृढ़ रूप से स्थापित कर पाया है। प्रायः विश्व के प्रत्येक देशों में मानव सभ्यता का विकासकाल लगभग समान रहा है। आरंभ में मानव प्रकृति के बहुत निकट था, जिसके फलस्वरूप वह अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति से कर लेता था। प्राचीन काल का मानव चाहे वह नील नदी घाटी सभ्यता से संबंधित हो या सिन्धुघाटी सभ्यता से प्रत्येक प्राचीन सभ्यता का मानव आरंभ में समान रूप से विकसित हुआ। विकास के इस चरण में मानव ने अपने जीवन जीने के तौर तरीकों

में बदलाव लाना शुरू किया। आदिम युग, पाषाण युग और मध्यपाषाण युग में मानव औजारों पालतु पशुओं से परिचित हुआ। प्राचीन मानव ने घुमन्तु जीवन को त्यागकर कबीलों और समूहों में रहना प्रारंभ किया और पशुपालन के प्रयोग स्वरूप उन्हें पशुओं के लिए चारा और भोजन की समस्या उत्पन्न हुई फलस्वरूप घास चारे के लिए उन्हें बार–बार दूसरे जगह जाना होता था। इस समस्या के समाधान हेतु उन्होंने घास के बीज नदी के किनारे मुलायम भूमि में चारा उगाना प्रारंभ किया, जिसकी पहचान बाद में अनाज के रूप में हुई। फलतः कृषि का आर्विभाव हुआ और प्राचीन समाज में कृषि पर निर्भरता बढ़ती गयी। सभ्यता के इन क्रम में मध्ययुग में लोगों ने शिल्पकला, लघुउद्योग एवं कुटीर उद्योगों से अपने आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया।

धीरे–धीरे जब अर्थ एवं व्यापार का क्षेत्र विस्तृत होता चला गया तो प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी और नये–नये उत्पादन और उत्पाद बढ़ते गये। जब औद्योगीकरण तीव्र नहीं हुआ था तो समाज में लोग सामान्यतः खेतीबाड़ी करते थे या दस्तकारी के धन्धों को पारम्परिक रूप से चलाते थे। इस अवस्था में परिवार एक आर्थिक इकाई थी, जिसका जुड़ाव उत्पादन से था। परिवार के सभी लोग खेतीबाड़ी करते थे और उस खेती से उत्पन्न होने वाले चीजों का उपभोग करते थे हस्तशिल्पों को बाजार में विक्रय कर अपना जीवन निर्वाह करते थे। अर्थ अर्जित करने के नये–नये साधन और औद्योगीकरण के फलस्वरूप अब परिवार के सदस्य घर से बाहर निकलकर कारखानों में कार्य करने लगे। कल कारखानों के स्थापित होने से इन उद्योगों में उत्पादन कार्य में मानव श्रम की आवश्यकता बड़े पैमाने पर होने लगी, क्योंकि जहाँ श्रम है वहाँ श्रमिक का होना नितांत आवश्यक है। श्रम और श्रमिक दोनों एक दूसरे के पूरक है। श्रमिक हमारे समाज का वह तबका है जिस पर समस्त आर्थिक उन्नति टिकी होती है। यहाँ पर एक बात महत्वपूर्ण है कि ''दुनिया चाहे ईश्वर ने बनाई हो, पर इसकों बदला और गढ़ा श्रमिकों ने ही है। श्रमिक मानवीय श्रम का सबसे आदर्श उदाहरण है। वह सभी प्रकार के क्रियाकलापों की धुरी है। आज के मशीनी युग में भी उसकी महत्ता कम नहीं हुई है। श्रमिक अपना श्रम बेचता है, बदले में वह न्यूनतम मजदूरी प्राप्त करता है, उसका जीवन यापन दैनिक मजदूरी के आधार पर होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दल्लीराजहरा माइंस में कार्यरत ठेका श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति के संबंध में जानकारी प्राप्त करना जिसके अंतर्गत माइंस में कार्यरत श्रमिकों में कार्य की संतुष्टि संबंधी अध्ययन किया जा सके ताकि समाज के लोग इस हकीकत से अवगत हो जाये की शिक्षा एवं विज्ञान तकनिकी में उन्नति होने के बावजूद मजदूरों की स्थिति इतनी दयनीय है की उनका पलायान समाज में एक महतवपूर्ण समस्या का रूप ले रही है।

शोध प्रविधि

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे अध्ययन के लिए छ.ग. के लिए बालोद जिले के शहर दल्लीराजहरा में स्थापित लौह अयस्क माइंस को चूना गया है एवं तथ्यों के संकलन हेतु संभावित निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। दल्ली – राजहरा लौह अयस्क परिसर भिलाई इस्पात का मौजूदा कैप्टिव लौह अयस्क बीएसपी प्लांट स्रोत है। इसमें दल्ली मैनुअल माइंस, दल्ली मैकेनाइज्ड माइंस, झरंडल्ली माइंस महामाया माइंस, और राजहरा यंत्रीकृत माइंस शामिल हैं। राजहरा माइंस वर्ष 1960

में विकसित किया गया था और दल्ली माइंस वर्ष 1962 में विकसित की गई थी। राजहारा के अयस्क प्रसंस्करण संयंत्र में बीएफ ग्रेड गांठ का उत्पादन करने के लिए 3 – स्टेज क्रशिंग और स्क्रीनिंग और सिंटर ग्रेड शामिल है।

समंकों का संकलन

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक समंकों का एकत्रीकरण अनुसूची द्वारा किया गया है। ठेका श्रमिकों को उत्तरदाताओं के रूप में चयन करने के लिए यह भी ध्यान में रखा गया है कि संयंत्र में स्तरीकरण में कुशल, अकुशल, अर्धकुशल एवं अतिकुशल सभी ठेका श्रमिक आ जाये। वर्तमान में 1371 ठेका श्रमिक कार्यरत है जिनमे 413 अकुशल, 305 अर्धकुशल, 266 कुशल एवं 387 अतिकुशल है ,जिसके अंतर्गत 300 ठेका श्रमिक उत्तरदाताओं का चयन किया गया जो छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ में कार्यरत है। इनमें से 90 अकुशल, 60 अर्धकुशल, 70 कुशल एवं 80 अतिकुशल है।

तथ्यों के संकलन में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है तथा साक्षात्कार के द्वारा उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गई। अध्ययन के दौरान अवलोकन प्रविधि का भी प्रयोग किया गया तथा आवश्यकता पड़ने पर उत्तरदाताओं से औपचारिक बातचीत के माध्यम से भी तथ्य संकलन में सहायता प्राप्त हुई।

आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीक के माध्यम से प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है।

परिणाम

प्रस्तुत शोध में यह ध्यान दिया गया है कि वर्तमान अध्ययन समाजशास्त्रीय है और जिसके अंतर्गत खान श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक स्थितियों पर ध्यान देना आवश्यक है, जो अंत में माइन्स के श्रमिकों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक समस्याओं का निर्धारण करें। जब श्रमिकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया जाता है जिसमें यह पाया गया की माइंस में ठेका श्रमिकों की कार्य करने की आयु सीमा 55 वर्ष होती हैं आयु का वर्गीकरण 10-10 वर्ष के तीन वर्गों में किया गया है जो 25 वर्ष से शुरू हो क्र 58 वर्ष तक है सबसे ज्यादा ठेका श्रमिक 36 से 45 वर्ष की आयु वर्ग में पाए गए जो कुल उत्तरदाताओं का 45.7 प्रतिशत हैं । उम्र के लिहाज से कुल उत्तरदाताओं का वितरण निम्नानुसार दिखाया गया है।

तालिका क्रमांक.1 उत्तरदाताओं की आयु

क्र.	आयु (वर्षों में)	आवृति	प्रतिशत
1	25 – 35	52	17.3
2	36 – 45	137	45.7
3	46 – 58	111	37
	कुल योग	300	100

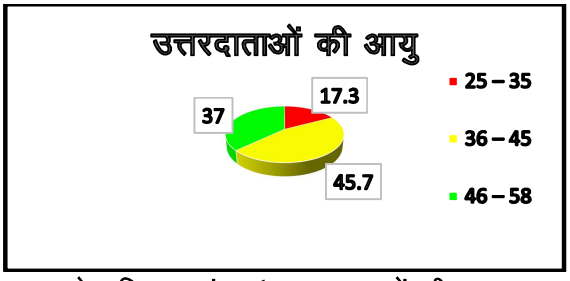

लेखाचित्र क्रमांक. 1. उत्तरदाताओं की आयु

प्रस्तुत अध्ययन के लिए कुल तीन सौ उत्तरदाताओं के साक्षात्कार के विवरण के आधार पर उनकी स्तिथि का विश्लेषण किया गया है, सभी तीन सौ उत्तरदाता पुरुष हैं माइंस में कोई भी महिला ठेका श्रमिक कार्यरत नहीं पाई गईं, सबसे कम उत्तरदाता कुशल श्रेणी के थे और सबसे अधिक अकुशल श्रेणी । ठेका श्रमिकों के इस विभाजन का आधार उनकी शैक्षणिक अहर्ता नहीं अपितु उनका अनुभव होता है ।

तालिका क्रमांक.2 आय के आधार पर वर्गीकरण

क्र.	वर्ग	वार्षिक आय	आवृति	प्रतिशत
1	अकुशल	1,31,040	90	30
2	अर्धकुशल	1,63,800	70	23.3
3	कुशल	1,96,248	60	20
4	अतिकुशल	2,28,696	80	26.7
		कुल संख्या	**300**	**100**

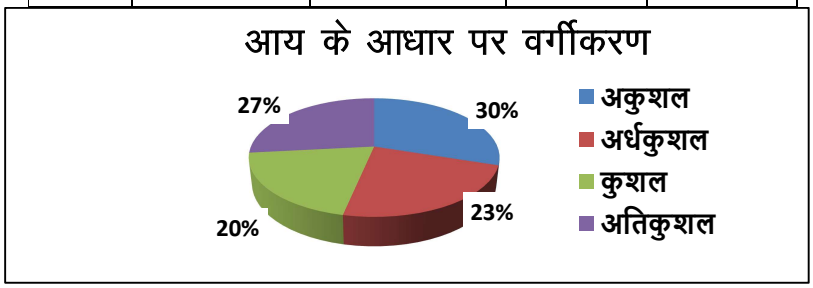

लेखाचित्र क्रमांक. 1. आय के आधार पर वर्गीकरण

शिक्षा जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण अंग है शिक्षा हमे अपने जीवन को सही ढंग से जीने का तरीका सिखाती है । जीवन की जटिलताओं को समझने में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान होता है ठेका श्रमिकों के सन्दर्भ में देखा जाये तो माइंस में कार्यरत मजदूरों का वर्गीकरण उनकी योग्यता के अनुसार नहीं होता अपितु उनके अनुभव के आधार पर किया जाता है । कोई अगर स्नातक भी

है किन्तु उसे कोई अनुभव नहीं है तो उसे अकुशल की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है जितना ज्यादा अनुभव उतनी ज्यादा आय और वह कुशल की श्रेणी में आता है शिक्षा का उसकी आय से कोई सम्बन्ध नहीं है । बहुत से मजदूरों का मत है की शिक्षा उनकी कार्य कुशलता पर कोई असर नहीं डालती दूसरी तरफ बहुत से मजदूर ये भी समझते हैं की शिक्षा के आभाव में उनका शोषण किया जाता है । बहुत से श्रमिक हित में नियम और कानून ऐसे हैं जिनकी जानकारी न होने के कारण ये ठेका मजदूर उनका लाभ नहीं उठा पाते अध्ययन के दौरान ये देखा गया की बहुत से मजदूर जो स्नातक हैं किन्तु अनुभव के अभाव में अकुशल की श्रेणी में सम्मिलित हैं और बहुत से ऐसे मजदूर जो पांचवी तक पढ़े हैं उनको अनुभव ज्यादा होने की वजह से अतिकुशल की श्रेणी में सम्मिलित किया गया है । इस तरह के विभाजन की वजह से मुख्यतः मजदूरों में कार्य असंतुष्टि की स्तिथि पैदा होती है, ज्यादा पढ़ा किन्तु कम आमदनी पाने वाला मजदूर हमेशा असंतुष्टी से जूझता है अपनी पूरी कार्य कुशलता से कार्य नहीं करता वहीँ कम पढ़ा किन्तु ज्यादा आय पाने वाला मजदूर अति आत्मविश्वास के चलते अपनी कार्य कुशलता खो देता है । माइंस में कार्यरत ठेका श्रमिकों के सन्दर्भ में यह पाया गया है की स्नातक और आई.टी.आई उत्तीर्ण श्रमिकों में कम शिक्षित मजदूरों की अपेक्षा कार्य असंतुष्टि अधिक है ।

तालिका क्रमांक क्रमांक.3 उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

क्र.	शैक्षणिक स्थिति	आवृति	प्रतिशत
1	पांचवी कक्षा	14	4.7
2	आठवीं कक्षा	30	10
3	दसवीं कक्षा	69	23
4	बारहवीं कक्षा	126	42
5	आई.टी. आई	45	15
6	स्नातक	16	5.3
	कुल योग	**300**	**100**

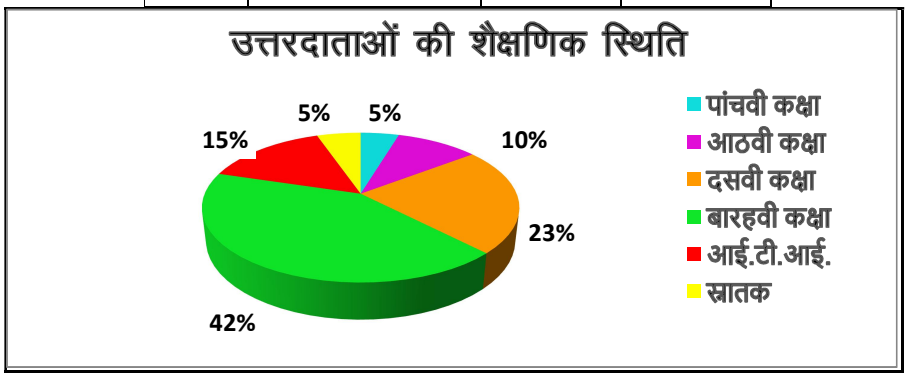

लेखाचित्र क्रमांक. 3. उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

पारिवारिक समावेश व्यक्ति के जीवन पर एक बहुत गहरा असर डालता है । परिवार जहाँ एक तरफ मानसिक और शारीरिक संतुष्टि का स्त्रोत है वही दूसरी ओर जिम्मेदारी भी लाता है । परिवार आदमी को स्थिर और जिम्मेदार बनता है । परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यक्ति किसी भी काम को पूरी निष्ठा से पूर्ण करता है किसी कार्य को करने के पीछे की प्रेरणा या तो व्यक्ति की महत्वाकांक्षा होती है । परिवार को खुश रखने की इच्छा माइंस में शरीर तोड़ मेहनत करने के लिए बहुत ही मजबूत मानसिक इच्छा शक्ति की जरूरत होती जिसको परिवार ही बल देता है । तालिका क्रमांक 4 में माइंस में कार्यरत ठेका मजदूरों की वैवाहिक स्तिथि का विवरण प्रस्तुत है ।

तालिका क्रमांक 4 उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

क्र.	वैवाहिक स्तिथि	आवृति	प्रतिशत
1	विवाहित	280	93.3
2	अविवाहित	20	6.7
	कुल योग	**300**	**100**

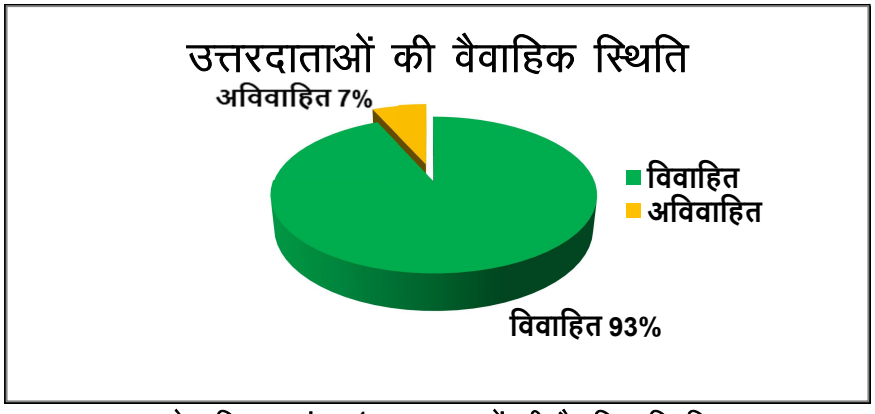

लेखाचित्र क्रमांक. 4. उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

परिवार की आवश्यकताएं उसके प्रकार एवम् सदस्यों की संख्या पर निर्भर करती है एक बड़े परिवार की आवश्यकताएं भी ज्यादा होती हैं जिन्हें सब मिल जुल कर पूरा करने का प्रयास करते है, वहीँ छोटे परिवार की आवश्यकताएं भले ही कम हों किन्तु उनको पूरा करने के लिए काम करने वाले भी कम होते हैं । परिवार चाहे जैसा भी हो संयुक्त या एकाकीय दोनों ही प्रकार के पारिवारिक समावेश के अपने अपने फायदे और नुकसान होते हैं । परिवार के सभी सदस्यों को संतुष्ट करने और उनकी आवश्यकताओं को पूर्ण करने की इच्छा ही व्यक्ति को मेहनत करने के लिए प्रेरित करती है ठेका श्रमिकों के सन्दर्भ में 67.3 प्रतिशत श्रमिक संयुक्त परिवार से सम्बंधित थे

और 32.7 प्रतिशत एकाकी समावेश में रहने वाले है ये भिन्नता कार्य संतुष्टि में बहुत बड़ा योगदान प्रदान करती है ।

तालिका क्रमांक – 5 उत्तरदाताओं के परिवार का प्रकार

क्र.	परिवार का प्रकार	आवृति	प्रतिशत
1	संयुक्त	202	67.3
2	एकाकी	98	32.7
	कुल योग	**300**	**100**

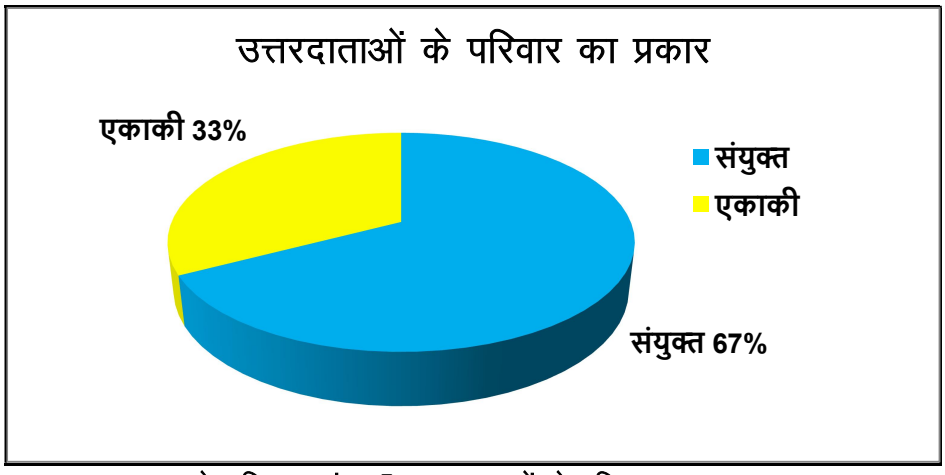

लेखाचित्र क्रमांक. 5. उत्तरदाताओं के परिवार का प्रकार

परिवार में सभी सदस्यों की अपनी अपनी भूमिका और महत्वता होती है सभी एक दूसरे के साथ सामंजस्य बना कर चलते हैं ताकि पारिवारिक ढांचा सुचारू रूप से चलता रहे। अधिकतर ठेका श्रमिकों का 6 से 8 सदस्यों का परिवार दर्ज किया गया जिसमे सिर्फ एक या दो लोग ही कमाने वाले लोग थे हालांकि 8 से 10 सदस्यों वाले परिवार भी सूचि में दूसरे पायदान पर हैं परिवार में सदस्यों की संख्या की जानकारी तालिका क्रमांक 6 में उपलब्ध है ।

तालिका क्रमांक – 6 उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या

क्र.	परिवार में सदस्यों की संख्या	आवृति	प्रतिशत
1	2 – 4	52	17.3
2	4 – 6	85	28.3
3	6 – 8	92	30.7
4	8 – 10	71	23.7
	कुल योग	**300**	**100**

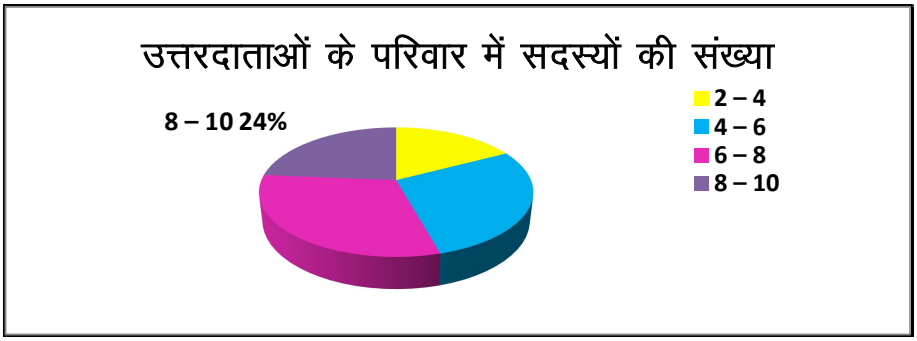

लेखाचित्र क्रमांक. 6. उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या

माइंस में ठेका श्रमिकों से विविध प्रकार के काम लिए जाते हैं तीन सौ श्रमिकों में बीस प्रकार के कार्यों की पुष्टि हुई है जो यह ठेका श्रमिक करते हैं हर क्षेत्र में इन श्रमिकों से काम करवाया जाता है इसमें अकाउंटेंट से ले कर कंप्यूटर ऑपरेटर , ड्राइवर, हेल्पर, इलेक्ट्रिशियन, प्लम्बर, हाउसकीपिंग, मकेनिक, सुपरवाइजर, टेक्निशियन, वेल्डर अमानी आदि सम्मिलित हैं सबसे ज्यादा इन ठेका श्रमिकों में से अमानी और ड्राइवर हैं । मनुष्य के आस पास का वातावरण उसकी कार्य कुशलता पर सीधे–सीधे असर डालता है उसके रहन–सहन का उसकी मानसिक मनोस्थिति का उसके काम पर असर देखा जा सकता है, इस अध्ययन में सम्मिलित ठेका श्रमिकों की मानसिक मनोस्थिति का अनुमान लगाने और इस अध्ययन के सफलतापूर्वक समापन के लिए उनके मकान के प्रकार की जानकारी का उपयोग किया गया है 64.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के कच्चे मकान है और 14.7 के झोपड़ीनुमा पक्के मकान में रहने वाले श्रमिक केवल 21 प्रतिशत ही है जिसमे बहुत से लोग तो किराये के मकान में रहते है ।

कुल उत्तरदाताओं में से केवल 7 प्रतिशत श्रमिक ही ऐसे हैं जिन्हे लगता है की उनकी आर्थिक स्थिति खराब है 76. 3 प्रतिशत की आर्थिक स्थिति सामान्य है और केवल 3.7 प्रतिशत अपनी आर्थिक स्थिति की बहुत अच्छा मानते हैं, इस का मुख्य कारण परिवार में कम सदस्य में कमाने वाले है ।

तालिका क्रमांक – 7 उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति

क्र.	आर्थिक स्थिति	आवृति	प्रतिशत
1	बहुत अच्छा	11	3.7
2	अच्छा	39	13
3	सामान्य	229	76.3
4	खराब	21	7
	कुल योग	**300**	**100**

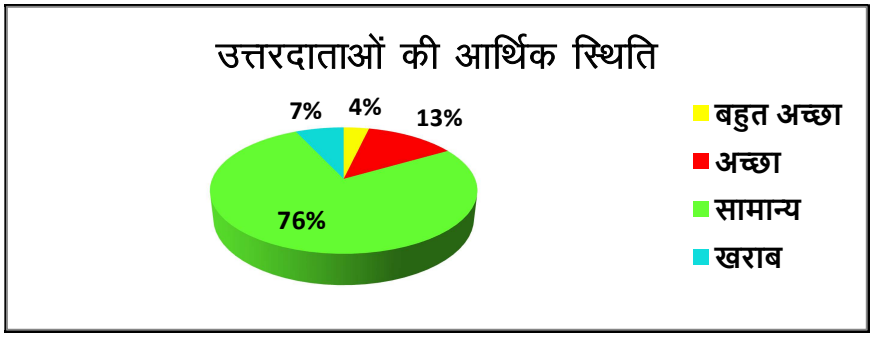

लेखाचित्र क्रमांक. 7. उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति

आर्थिक कारणों से यदि कोई काम पूर्ण नहीं हो पता तो सबसे पहले व्यक्ति के दिमाग में ऋण लेकर उस कार्य को पूरा करने का विचार आता है, ठेका श्रमिकों के सन्दर्भ में यदि श्रमिक को बैंक में ऋण लेन देन की पूरी जानकारी नहीं हो तो उसे बहुत कठिनाई से ऋण मिलता है उसे भेदभाव का सामना करना पड़ता है आर्थिक मदद की आवश्यकता हर किसी को होती है कभी बीमारी की वजह से तो कभी बच्चों की शिक्षाएँ. कभी विवाह के लिए तो कभी अन्य किसी पारिवारिक कारणों की वजह से 86.7 प्रतिशत ठेका श्रमिक पर ऋण का अतिरिक्त बोझ है ।

तालिका क्रमांक – 8 उत्तरदाताओं पर ऋण की स्थिति

क्र.	ऋण की स्थिति	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	260	86.7
2	नहीं	40	13.3
	कुल योग	300	100

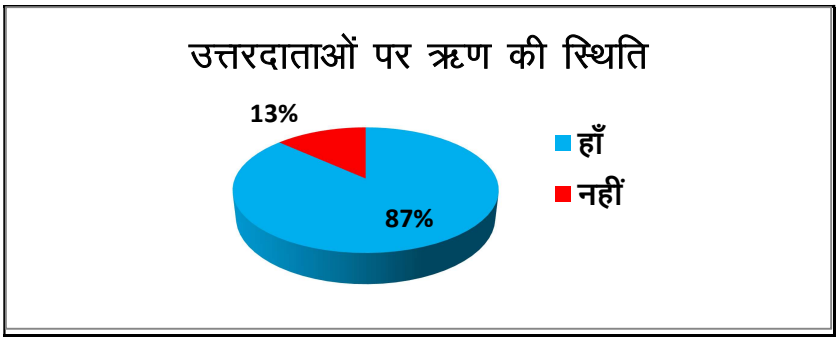

लेखाचित्र क्रमांक. 8. उत्तरदाताओं पर ऋण की स्थिति

ऋण लेते समय किन्ही कारण वश श्रमिकों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिसमे उनके द्वारा जानकारी का आभाव सबसे मुख्य कारण बताया गया है । ऋण लेने वालों में सभी ने

भेदभाव और समय पर ऋण न मिलने की बात कही है ठेका श्रमिक होने के कारण बैंक अधिकारी उनके साथ उचित व्यवहार नहीं करते और उनको ऋण की राशि मिलने में भी विलम्ब होता है ।

तालिका क्रमांक - 9 उत्तरदाताओं को ऋण देने में भेदभाव

क्र.	भेदभाव का सामना	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	253	84.3
2	नहीं	47	15.7
	कुल योग	**300**	**100**

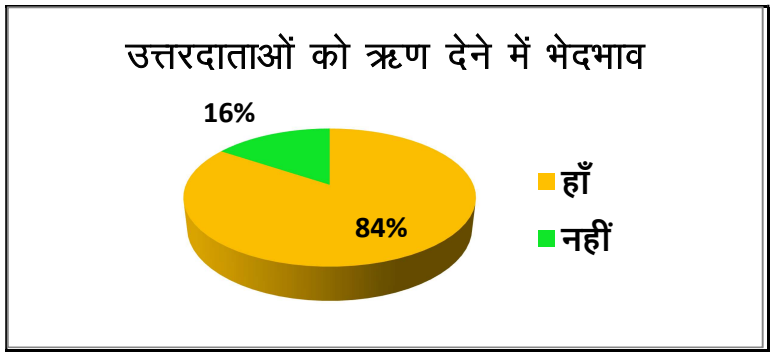

लेखाचित्र क्रमांक. 9. उत्तरदाताओं को ऋण देने में भेदभाव

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि कार्यरत ठेका श्रमिक अपने कार्य से प्राप्त आय से संतुष्ट नहीं हैं क्यूंकि इस कारण उन्हें अपना परिवार चलने में, सामजिक कार्यों में सम्मिलित होने में, दिक्कतों का सामना करना पड़ता है इसके साथ ही आय से मिलने वाली रकम से उनके परिवार का भरण पोषण न हो पाने की वजह से ऋण पर भी निर्भर रहना पड़ता है इस प्रकार हम यह कह सकते हैं की दल्ली राजहरा में कार्यरत ठेका श्रमिकों को ना तो अपनी शिक्षा के अनुसार आमदनी मिलती हैं और न ही प्रोत्साहन जिसके कारण उनमे संतुष्टि का स्तर कम है। कम आमदनी के कारण उन्हें समाज में उचित स्थान भी नहीं मिल पाता।

ऋणग्रस्तता असंगठित क्षेत्र के श्रमिक वर्ग की एक प्रमुख समस्या है। माइंस में संलग्न श्रमिकों में दो तिहाई से भी अधिक श्रमिक ऋणग्रस्त हैं। सामजिक कार्यों के लिए जैसे शादी, बच्चों की पढ़ाई एवं अन्य पारिवारिक जरूरतों के लिए श्रमिकों को ऋण लेना पड़ता है। ऋणग्रस्तता के अन्य कारण कम आय, कार्य की अस्थायी प्रकृति, परिवार का आकार, विवाह एवं निम्न जीवन स्तर है। कुछ श्रमिकों में ऋणग्रस्तता का कारण पूर्व में लिये गये ऋण की अदायगी भी होगी। इस तरह ऋणग्रस्त ठेका श्रमिक ऋण में ही जन्म लेते हैं तथा ऋणग्रस्तता में ही समस्त जीवन व्यतीत करते हैं। ठेका श्रमिक होने के साथ–साथ उन्हें आवश्यकता अनुसार ऋण भी नहीं मिल पाता ,उनके साथ इस कारण वहां भी भेदभाव किया जाता है ।

प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि दल्लीराजहरा माइंस में श्रम कल्याण से संबंधित कार्य संतोषजनक रूप से संपादित नहीं किये जाते, इस संबंध में शासन के नियमों का भी पालन नहीं होता है। अनौपचारिक संबंध श्रमिकों के मध्य आपस में तो पाये गये, किन्तु प्रबंधकों एवं श्रमिकों के मध्य अनौपचारिक संबंध विकसित नहीं है। कार्य एवं वेतन में अधिकांश श्रमिक असंतुष्ट पाये गये। सामाजिक सुरक्षा हेतु यद्यपि माइंस द्वारा उपाय किये गये हैं, किन्तु ये प्रयास पूर्णतः सफल नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. उव्लल आर.के. *इकोनॉमीक्स रिफॉर्म इन इण्डिया,* न्यू सेन्चुरी पब्लिकेशन (2005).
2. कपूर डॉ.एस.के. *हयूमन राइटस,* सेन्ट्रल लॉ ऐजेन्सी, इलाहाबाद, (2005).
3. झा.विश्वनाथ. *औद्योगिक समाजशास्त्र* रावत पब्लिकेशन, जयपुर, (2012).
4. अल्का रात्रे,ए.के.पाण्डे. *लघु उद्योग में श्रमिकों का अध्ययन* (यूनीक स्ट्रक्चर एवं टावर्स लिमिटेड उरला, जिला–रायपुर). Research J. Humanities and Social Sciences. 3(2): April-June, 2012, pp.**217-219.**
5. तिवारी रीना, नरेटी कुमार शिकलेश. *भिलाई इस्पात सयंत्र में कार्यरत ठेका श्रमिकों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन* (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में). Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika. 6 (2) (Part-1): March, 2019, pp.H-**62-65**.